03 / 01 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

ब्राह्मण सो देवता धर्म की
श्रेष्ठ आत्मा बनने की अनुभूति

➢➢ स्व चिंतन मैं डूबी मैं आत्मा

➳ _ ➳ कल्प के अति मूल्यवान संगमयुग पर हूं

➳ _ ➳ कितना श्रेष्ठ भाग्य है मेरा

→ अपने पिता को पहचान

→ मुझ आत्मा ने वर्स का अधिकार पा लिया है

→ संसार की करोड़ों आत्माएं

→ परमातम प्यार की प्यासी बन ढूंढ रही है

◆ पर वरदाता बाप ने मुझे अपना बना

◆ सर्व प्राप्तियों का अनुभव करा दिया है

◆ बाबा ने व्यर्थ का त्याग करा मेरा भाग्य ऊंच बना दिया है

● मैं इस विश्व की श्रेष्ठ आत्मा हूं

● डायरेक्ट बाप से मेरा संबंध है

➳ _ ➳ इस वैरायटी कल्पवृक्ष का तना

➳ _ ➳ मैं ब्राह्मण सो देवता धर्म की आत्मा है

→ बाबा हम ब्राह्मण बच्चों को ज्ञान और गुणों से श्रृंगार कर

→ पूज्य देवता बना रहा है

➢➢ मैं आत्मा त्याग और भाग्य को स्मृति मैं लाती हूं

➳ _ ➳ मुझ आत्मा ने क्या त्याग किया, और क्या भाग्य पाया?

→ अल्पकाल की निद्रा को जीत

◆ स्वयं सोना बन गई

→ छी छी खानपान को छुड़ा बाबा ने मुझे

◆ हेल्थ वेल्थ दोनों की प्राप्ति करा दी

→ एक छुड़ाकर पदम की

◆ प्राप्ति स्वरूप बना दिया

→ डायरेक्ट बाप से संबंध में आने वाली

◆ विश्व की श्रेष्ठ आत्मा बनाया

→ इस कल्पवृक्ष की टाली में लटकी मुझ आत्मा को

◆ बाबा ने वृक्ष का तना अर्थात आधार बना दिया

→ व्यर्थ का त्याग करा मेरा

◆ भाग्य ऊंचा बना दिया

→ मैं आदि सनातन ब्राह्मण सो देवता धर्म की बन गई

→ बाबा ने मुझे ऐसी श्रेष्ठ प्राप्ति स्वरूप आत्मा बनाया

◆ इस बेहद ड्रामा के अंदर

◆ मैं महावीर पाटधारी आत्मा हूं

● सदा बाप की मोहब्बत में समाई

● मेहनत से मुक्त हूं

● सदा याद स्वरूप

● सर्वगुण स्वरूप

● सर्व शक्ति स्वरूप आत्मा हूं

➢➢ मैं बाप दादा के साथ वतन में हूं

➳ _ ➳ बाबा मुझे विश्व कल्याण की जिम्मेवारी का ताज पहनाते है

→ और मैं आत्मा अपने पूज्य स्वरूप को धारण कर

◆ इस सृष्टि पर परमात्मा को पुकार रही हर आत्मा को

- अपने पूज्य स्वरूप द्वारा प्राप्ति करा
- सर्व की मनोकामनाएं पूर्ण कर
- सब की प्रीत एक बाप से जुड़वा रही हूं